The Whispers
A Journal of Tribal Life, Literatures and Cultures
Published by Sanskruti Kendra, Sundargarh, Odisha, India

10.5281/zenodo.13737415

एक था जमाना

एक था जमाना, सुना करते थे गजल “कोई ताजा हवा चली”
अब तो छोड़छाड़ के सालिम की गलि, अनारकलि भी डिसको चली।

संगीत मे जो मिठास थी पहले, वो अब कहाँ से आये
देखो अब तो रेडियो भी मिरची कहलाये।

एक था जमाना, डर था जंगली जानवर कहीं घर में न आ जायें
बेटा अब पूछता है मेरा, “पापा! आनिमल देखने थिएटर जाएँ!”

पास बैठ कर आँसू पोँछते थे, दोस्त थे तब हमारे ऐसे
अकेले ही रोओगे तुम, स्क्रीन से बाहर किसी के हाथ आएंगे कैसे!

एक था जमाना, हुआ करता था फोन बात करने के लिये
अब खरीदा जाता है मोबाइल, फोटो अपलोड और लाइक करने के लिए।

अचानक मेहमान आते थे, ले कर ढेर सारी छोटी छोटी खुशियां
नई पीढ़ी क्या जाने, आंगन में सो के रात को सुना उनसे कहानियां!

एक था जमाना, बारिस के बाढ़ कागज की कश्टी चलाते थे हम नालों में
उठा कर सेल्फी अब तुम लिखते हो ‘loved sailing ship#’ नीचे बइत-बन्दाणी में।

सदियों में थी हाथ धोकर, बिठाकर खाना खिलाने की प्रथा
अब बन गयी है होटेल जैसा, एनवेलोप देकर लाइन लगा के खाने की प्रथा।

वो दिन दूर नहीं, क्यू-आर कोड के साथ बैठेंगे दुलहा-दुलहन रिसेप्शन में
५०० रुपये में मछली-भात, १००० में मटन भात, ये भी होंगे ऑप्शन में।

रामायण, महाभारत, दयासागर दिखाया जाता था, ताकि हम कुछ सिख सकें
अब वेब-सिरीज का जमाना है, ताकि नग्नता, क्रूरता और नई गाली सिख सकें।

एक था जमाना, लगा स्वाद भूना हुवा मक्काई का, सब से बढ़कर
वाह बेटा! वही हमें तुम खिलाते हो आज स्टार्टर मे, स्वीटकॉर्न कहकर।

झूम उठती थी लड़कियां, मिलती थी अगर २०० की साड़ी
अब तो मुस्कान भी न ला पाये, ब्राण्डेड फास्ट-ट्रैक की घड़ी।

होती थी दिन की सुरवाद भजन से, बात है ये काफि पुरानी
अब तो स्टुडेण्टस् के मोबाइल में भी बजे हैं हलकत जवानी।

शर्म आती है तुम्हें रीति-रिवाजों से और सादरी बोलने से
पर कोई ऐतराज नहीं है तुम्हे, डी.जे. बजा कर साइलो नाचने से।

नाच कर कहते हो, 'It is chain dance & I'm proud to be an Adivasi"
समाज सेवा, रैली, धार्मिक कामों के वक्त, क्यों बन जाते हो आलसी ?

एक था जमाना, गाने थे, "तेरे जैसे यार कहां, प्यार दीवाना होता है"
इश्क तो अभी कमबख्त होता है और हर एक फ्रेण्ड सो-कॉल्ड कमीना होता है।

पार्टि और फंक्शन में, छोटे कपड़े पहनने से तुम्हें कूल लगती है
हम ठहरे पुराने लोग, ऐसे डिजाइन तो हमें किसी दर्जी की भूल लगती है।

पैण्ट से जीन्स, जीन्स से कार्गो, कार्गो से हुवा फिर नैरो
लगे हैं कम होने मिनी से माइक्रो-मिनि तक, जरा तो ठहरो।

बदल गया है वो दौर, बदल गया है जमाना, ऐ नयी पीढ़ी! बस इतना याद रखना!
समय के साथ नये तरीके तुम जरुर अपनाना, पर तजरीबा हमेशा हमारा ही रखना!

अजीत कुमार बार्ला